281 P
H 40

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1378/1014

आह्वानांक Call No. ______

अवाप्ति सं० Acc. No. 281

Re
17-1

✽ वन्देमातरम् ✽

भारत का महाभारत

मचे देश में उथल पुथल ऐसा संग्राम मचाना है ।
केवल सत्य अहिंसा ही से सारा काम चलाना है ॥
सत्याग्रह की वारों से दुश्मन को हमें भगाना है ।
भारत गुलाम नहिं रह सकता आलम को यही दिखाना है ॥

लेखक व प्रकाशक

जानकी प्रसाद "बेधड़क"

मु० पो० बहुआ, ज़िला फतेहपुर ।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम बार]   १९३१ ई०   [मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 281
Date 6.12.71
GOVT. OF INDIA

प्रार्थना

है न कोई सहायक तुम्हारे बिना,
हे पिता सुन हमारी विनय लीजिये ।
दीन संकट हरण हैं तुम्हरी शरण,
बेग बिगरी हमारी बना दीजिये ॥

मस्त हो नींद में सोये हैं इस कदर,
लुट रहा मालो जर है न कुछ भी खबर ।
हे कृपा सिन्धु करके मेहर की नजर,
गाढ़ निद्रा से अब तो जगा दीजिये ॥

कांपता था जगत जिनके भय से कभी,
आज बन बैठे वो क्रूर कायर सभी ।
शीघ्र देकर सञ्जीवनी बूटी कोई,
मुर्दों को दुबारा जिला दीजिये ॥

छोड़ बैठे सभी हाय उत्तम चलन,
नीच कर्मों से निस दिन लगाई लगन ।
भूले भटके हुँओ को हे तारन तरन,
सत्य मारग कृपा कर बता दीजिये ॥

चढ़ आया है सर में लुटेरों का दल,
कर रहा रात दिन है अनाचार छल ।

हर तरह हो रहा दीन भारत विकल,
नाथ अबतो दुखों से छुड़ा दीजिये ॥
सत्य पथ से कभी पग न पीछे धरें,
सत्य ही के लिये बस जियें और मरें ॥
बिघ्न बाधा से मन में कभी ना डरें,
हे प्रभू यह हमें हौसला दीजिये ॥
बेधड़क सबके मन में प्रकाश करो,
घोर अज्ञानतम का विनाश करो ।
टेर सुनिये नहीं अब निरास करो,
पार नइया हमारी लगा दीजिये ॥

लाहौर कांग्रेस का प्रस्ताव

(ख्याल)

नाकाम हुई सब फौज पुलिस तब गौरन्मेंट घबराई है ।
सत्याग्रह की भारत में जब भारी छिड़ी लड़ाई है ॥
थी मुहलत सन् ३० तलक सरकार ध्यान कुछ लायेगी ।
भारत के दुखी किसानों को अब ज्यादा नहीं सतायेगी ॥
अधिकार सभी जो भारत के सब न्यायोचित वरतायेगी ।
भारत के प्रति गौरन्मेंट अब उदारता दिखलायेगी ॥

जूँ तक नहिं रेंगी कानों में तब सब जनता घबराई है।
सत्याग्रह की भारत में जब भारी छिड़ी लड़ाई है॥
लाहौर कांग्रेस के अँदर गांधी के हृदय मलाल रहा।
गौरन्मेंट की नीति देख कुछ सोच जवाहर लाल रहा॥
वल्लभ पटेल और सेन गुप्त को भी चालों ख़्याल रहा।
सब नेताओं के दिल अंदर बेसक बड़ा मलाल रहा॥
पूर्ण स्वराज की उसी समय मिलके स्कीम बनाई है।
सत्याग्रह॥

केवल सत्य अहिन्साही से सारा काम चलाना है।
सत्याग्रह की वारों से दुश्मन को हमें भगाना है॥
मचे देश मे उथल पुथल ऐसा सग्राम मचाना है।
भारत गुलाम नहिं रह सकता आलम को यही दिखाना है॥
चुन गये जवाहर राष्ट्रपती यह खुशी हिन्द में छाई है।
सत्याग्रह॥

गांधीजी तब खड़े हुये प्रस्ताव आपना पेश किया।
पूर्ण स्वराज ही लेना है सब लोगों को आदेश दिया॥
जनता ने तब बड़े ज़ोर से एकमत हो स्वीकार किया।
और बहुत सी बातें तय कर कांग्रेस को बर्खास्त किया॥
वीर जवाहिर उसी समय भारी स्पीच सुनाई है।
सत्याग्रह० ॥

बज गये युद्ध के फिर बाजे रण चंडी का आह्वान हुआ।
भारत आज़ाद बनाने का बच्चों बूढ़ों का ध्यान हुआ॥
तय्यार देश पर मिटने का भारत का सभी जवान हुआ।
अत्याचारों के मेटन को महिलाओं का घमसान हुआ॥
एक सिरे से भारत में क्या नई जान हो आई है।
सत्याग्रह० ॥

गाँधी बाबा सेनापति ने धर्म नीति से काम किया।
वायसराय लार्ड इर्विन पै अल्टीमेटम भेज दिया॥
गौरन्मेंट तब भी नहिं चेती नहिं विनय पर ध्यान दिया।
चाल आपनी मकारी से घुड़की भरा जवाब दिया।
बेधड़क महात्मा जी ने फिर रणभेरी तुरत बजाई है॥
सत्याग्रह० ॥

सत्याग्रह की रफ्तार।

(बहरेतबील)

जिस समय देश भर में धधकनी हुई,
आग सत्याग्रही की पड़ी मार है।
उस समय देश के सैकड़ों नारि नर,
खड़खड़ाने लगे जेल का द्वार है॥
सोचली थी सबों ने हृदय में यही,
कि गुलामी की हमको न दरकार है।

चैन लेंगे सभी देश आज़ाद कर,
वरना मर मिटना हमको स्वीकार है ॥
पूज्य गांधी का चरखा चला उस समय,
हुआ बरतानियों का वहिष्कार है ।
लङ्काशायर की अक्ल ठिकाने हुई,
कांप उट्ठी विलायती सरकार है ॥

चर्चिल चचा घबराये बहुत,
जायके गिरजा में बैठे मन मार है ।
दुआ मांगे बचाओ हे यीशुमसी,
कोई दीखे हमारा न रखवार है ॥
कहीं भारत निकल जायगा हाथ से,
तो फिर अंगरेज़ों की मिट्टी हो ख्वार है ।
लेडियां सभीं मारी मारी फिरें,
और हो जायगा चौपट व्यापार है ॥

स्वार्थी और घमण्डी अँगरेज़ सब,
मिल के भारत पै कर दई बौछार है ।
लार्ड इर्विन को फिर समझाया बहुत,
और भेजा दमन करने को तार है ॥
इधर बढ़ने लगा ज़ोर कांग्रेस का,
उधर करने लगी दमन सरकार है ।

शिमले से आर्डिनेन्स छुटे,
और होने लगा वार पै वार है ॥
जगह जगह लाठी डण्डे चले,
और गोली की हो गई बौछार है ।
हज़ारों ठुँसे नारि नर जेल में,
हो गये बन्द कितने ही अखबार हैं ॥

कांग्रेस कार्य्यकर्ता ठुँसे जेल में,
मालवीय गांधी जी पै हुआ वार है ।
लीडर बचने न पाये कहीं एक भी,
हुआ प्यारा जवाहर गिरफ्तार है ॥

सीमा प्रान्त की हालत करें क्या बयां
हुआ जो कुछ वहां पै अनाचार है ।
कितने ही निहत्थे घायल हुये,
कितने ही गये स्वर्ग के द्वार हैं ॥

ज्यों ज्यों सरकार का दमन बढ़ता गया,
उतनी कांग्रेस की बढ़ती गई मार है ।
बेकाम हुई सब फौज पुलिस,
तब तो थर्रा गई गोरी सरकार है ॥

राउन्टेबुल का स्वांग रचाया गया,
चापलूसों का थी जिसमें भरमार है ।

तब भी कांग्रेस का कार्य्य न कुछ भी रुका,
और बढ़ती गई दूनी रफ्तार है ॥
पूरे १२ महीने लड़ाई चली,
इधर प्रजा रही उधर सरकार है ।
एक तरफ लाठी डंडे और गोली चली,
एक तरफ शांति से सह रहे मार है ॥

समझौता

खाली होने लगे वार सब जिस समय,
सुलह करने को तब हुई तय्यार है ।
मुक्त लीडर सभी हो गये जेल से,
ऐसा झुकी गोरी सरकार है, ॥
लार्ड इर्विन ने गांधी से की प्रार्थना,
बंद कर दीजे सत्याग्रही मार है ।
सर्व सम्मति मांग राउण्डटेबुल में रख,
शांति से मामला लीजे निपटार है ॥
आर्डि नेंसों का हमने किया खातमा,
वन्द होगा पुलिस फौज का वार है ।
मुक्त होंगे अहिंसात्मक कैदी सभी,
शांति कायम रखखेगी सरकार है ॥
गांधी इर्विन ने इस तरह समझौता कर,
सर्त आपस में कर लीनी स्वीकार है ।

सन्धी को हृदय से पालन करे,
इस तरह हुआ दोनों में इकरार है॥
ध्यान धरके जरा अब सुनो मित्रवर
देसकी हो गई कैसी रफ़्तार है।
संधिका नीति से किसने पालन किया,
और किया किसने उसका तिरष्कार है॥

काँग्रेस का शाही फरमान

हुक्म कांग्रेस का फिर होगया देस में
बद कर दीजे सत्याग्रही मार है।
गांधी इर्विन से है जो सुलह हो गई,
पालन उसका करो चित्त मे धार है॥
टैकस बदी की चर्चा को छोड़ो यही,
हो पुलिस फौज का मत वहिस्कार है।
नहिं कानून भङ्ग होने पावें कहीं
रोक दी जल्दी करबन्दी परचार है।
गरीबों किसानों से है प्रार्थना
वीरो ! सह लीजे तुम मार पै मार है॥
जितना धरम से अदा कर सको,
लागान उतना तुम दीजे निरटार है।

तुमको रखना पड़े ध्यान इसका सदा,
सन्धि होवे कहीं पै न बेकार है ॥
हां तुमको ज़रूरत पड़े गर कहीं,
शान्तिमय पिकेटिङ्ग का अख़्तिार है ।
कांग्रेस कार्य्य इस तरह करने लगो,
उधर गांधीं का सुनिये समाचार है ।
सङ्ग में ले लिया बल्लभ सरदार को,
बारदोली क होगये तैयार हैं ॥
खुद लगान वसूल कराने लगे,
इस तरह सन्धि के हुये रखवार हैं ।
देस भर से बराबर ये कहते रहे,
सन्धि पालन को समझो निजीकार है
सूचना फिर निकाली गई जल्द ही,
जिसमें बिल्कुल किया साफ इजहार है ।
राउण्टेबुल सभा मे जभी जांयेगे,
सन्धि पालन करे पूर्ण सरकार है ।

सरकार की रफ्तार

(बहरेतवील)

मित्रो अब ध्यान धर सुन लीजै जरा,
सन्धि पालन किया कैसे सरकार है ।

कैसे ज़ुल्म किये संधि की आड़ में,
कैसा सरकार का रहा व्यवहार है ॥
संधि पालन हुआ सरहद में किस तरह,
यू० पी० में रही कैसी रफ़्तार है ।
नौकर शाही के कैसे करिश्मे खुले,
कैसे जारी रही ज़ुल्म की मार है ॥
कांग्रेस को मिटाने की कोशिश हुई,
१०८ दफा की रही मार है ।
कांग्रेस कार्य्यकर्ता ठुँसे जेल में,
और किसानों के ऊपर हुआ वार है ।
ज़र ज़मीं सारी उनकी कुड़ुक की गई,
लाठी बेतों की बेहद पड़ी मार है ।
हर तरह से बिचारे सताये गये,
और होता रहा वार पै वार है ॥
ज़मींदारों को कैसा उभाड़ा गया,
नौकरशाही बनी उनकी गमख्वार है ।
मदद देने कहा फौज और पुलिस की,
ऐसे छिपके हुआ अत्याचार है ॥
गोंडा उन्नाव को सिर्फ ले लीजिये,
वहां कैसे हुआ ज़ुल्म का वार है ।
बेइज़्ज़ती स्त्रियों की हुई जिस तरह,
उस तरह वर्णन होना भी दुश्वार है ।

कहीं शान्ति पिकेटिङ्ग रोकी गई,
और जलूसों सभों में पड़ी मार है।
बारदोली भी जुल्म से बच न सकी,
ऐसी मचली रही गोरी सरकार है॥

द्रौपदी रूपी जनता तड़पती रही,
नौकरशाही दुशाशन का था वार है।
पांडव रूपी लीडर रहे शान्ति से,
सिर झुकाये हुये बैठे मन मार है॥
गांधी भाई युधिष्ठिर की करनी को लख,
भीम रूपी जवाहर उठा झार है।
सत्याग्रह का गदा भारी कर में लिये,
बोला हो जा दुशाशन खबरदार है॥
अपनी शेखी में जो तू भूला फिरे,
निसहाय समझ कर रहा वार है॥
चूर तेरा घमण्ड मैं कर दूँ अभी,
करके सत्याग्रही गदा का वार है॥
क्रोध भारी युधिष्ठिर ने लख भीम का,
कहा बैठो भीम धीरज धार है।
निश्चय समझो हमारी ही होगी विजय,
अत्याचारों की होती सदा हार है॥

इस तरह गांधी ने सब को समझाय कर,
शान्ति औ सत्य अपने हृदय धार है ।
बारदोली ही के जुल्म को पेश कर,
लार्ड साहब को फिर दे दिया तार है ॥
उत्तर भी जब ठीक से न मिला,
कर दिया राउंडटेबुल से इंकार है ।
सारी इंगलैण्ड में मच गई खलबली,
हो गया युद्ध को देश तय्यार है ॥
गांधी की मांग मजबूरन पूरी हुई,
जिससे इंगलैण्ड को हुये तय्यार हैं ।
ता: २६ को सब के विदा ले लिया,
होगये जा जहाज में असवार है ॥
उस पारब्रम्ह ईश्वर से है प्रार्थना,
ध्यान जिसका करें सभी नर नार है ।
गांधी आये लौट देश में सकुशल,
सारे भारत का जो एक सरदार है ।
पूरा करो कांग्रेस का कार्य्य क्रम,
गांधी बाबा की आज्ञा को शिर धार है ।
सांति से डटे रहिये न डरिये जरा,
एक ईश्वर तुम्हारा मदद गार है ॥

हाथ से कात खद्दर पहिन लीजिये,
और विदेसों का करिये बहिस्कार है ॥
और झंडा तिरंगा उठा हर जगह,
मातु भारत की करियेगा जैकार है ॥

अदालत की बिलकुल न परवाह कर,
ग्राम में मामला कीजे निपटार है ।
खुद मेंमबर बनो और बनाओ सदा,
घर घर कांग्रेस का करो परचार है ।
बेधड़क आगे बढ़िये न डरिये जरा,
एक ईश्वर ही दुनियां का रखवार है ।
और करिये प्रतिज्ञा हृदय में यही,
देस अजाद करना निजी कार है ॥

महात्मा गांधी की लन्दन यात्रा

गांधी जी लन्दन गये हैं गर, तो कुछ करके ही आयेंग ।
भारत की हालत साफ साफ अङ्गरेजों को समझायेंगे ॥
किस तरह किया था समझौता, किस तरह किया फिर चूर उसे ।
नौकर शाही की कर तूतों, की पाल खोल दिखलायें गे ॥

जब हाथ में होयेगा चरखा, खद्दर की लँगोटी पड़ी हुई ।
उस समय देख लन्दन वाले, हैरान सभी हो जायेंगे ।

वही चलायेंगे चरखा, जिसने इङ्गलैण्ड तबाह किया।
यह देख के रो देंगे चर्चिल, और कितने ही घबड़ायेंगे॥
हम मालिक हों अपने घर के, नव युवकों की है राय यही।
और गांधी की है मांग यही, सो पूरी इसे करायेंगे॥
कर चुके बहुत से हैं वादे, नहिं काम बहानों से होगा।
खाली हाथों गांधी लौटे, तो भारी युद्ध मचायेंगे॥
जब हुक्म जवाहर का होगा, नव युवक सभी बढ़ आयेंगे।
इस स्वतन्त्राता की वेदी में हँस हँस के शीश चढ़ायेंगे॥
बेधड़क का अहिंसा के रण में बच्चा बच्चा शामिल होगा।
और सत्या ग्रह की वारों से भारत के भूत भगायेंग।

दो शब्द

प्रयाग में जिसकी जरूरत थी खुल गया

क्या

श्री रंगेश्वर ग्रन्थमाला कार्य्यालय

प्यारे सज्जनों, हमारे यहां हर प्रकार की राष्ट्रीय तथा समाजिक पुस्तकें काफी स्टाक में तय्यार हैं व और भी नई नई तमाम पुस्तकें तय्यार हो रही हैं ।

नोट—ब्योपारियों को बहुत ही सस्ते रेटपर माल भेजा जाता है। कम पुस्तकें मगाने वालों को उतने दामों के टिकट भेजना चाहिये। थोक खरीदारों को चौथाई रु० पेशगी भेजना चाहिये ।

हर तरह की पुतकें मिलने का एक मात्र पताः—

श्री रङ्गेश्वर ग्रन्थमाला कार्य्यालय,

८०, पानदरीवा, इलाहाबाद ।

मुद्रक— बेनो प्रसाद वाजपेई रङ्गेश्वर प्रेस, प्रयाग ।